33
तीन लघुकथाएँ

साहित्य की सबसे लंबी विधा उपन्यास का रूप आपने पिछले पाठ में पढ़ा। आइए गद्य साहित्य की सबसे छोटी और हृदय पर सीधे प्रभाव डालने वाली विधा लघुकथा को पढ़ते हैं। इस पाठ में हम हिंदी के अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषाओं में लिखी सुप्रसिद्ध लेखकों की तीन लघुकथाएँ पढ़ेंगे – पहली है, तमिल भाषाभाषी सुविख्यात लेखक 'सुब्रह्मण्यम् भारती' द्वारा लिखित 'कवि और लोहार', दूसरी लघुकथा का शीर्षक है 'क्या नहीं कर सकता'। यह एक मणिपुरी लघुकथा है जिसके लेखक 'इबोहलसिंह कांग्जम' हैं। तीसरी है बांग्ला लेखक 'बनफूल' की लिखी 'सड़क का आदमी' लघुकथा। आइए इन्हें विस्तार से इस पाठ में पढ़ते हैं और लघुकथा की विशेषताओं का विश्लेषण करते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- गद्य साहित्य की सबसे अधिक लोकप्रिय विधा लघुकथा की विशेषताओं की सूची बता सकेंगे;
- हिंदी के अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषाओं में रचित साहित्य की सराहना कर सकेंगे;
- कम शब्दों में अधिक प्रभावी ढंग से अपनी बात संप्रेषित करने की कला पहचान सकेंगे;
- गरीब व्यक्ति का भी आत्मसम्मान होता है और वह उसकी रक्षा करता है तथ्य को विश्लेषित कर सकेंगे;
- अपने व्यवसाय के अतिरिक्त दूसरों के व्यवसाय का पूरा सम्मान देना ही सभ्यता है, सिद्ध कर सकेंगे;

- आजकल भ्रष्टाचार के चलते कुछ भी संभव है, लघुकथा के आधार पर विश्लेषित कर सकेंगे;
- सरल भाषा का प्रयोग करते हुए गहरी बात की पहचान कर सकेंगे।

क्रियाकलाप

निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर एक छोटी-सी कहानी विकसित कीजिए–

- बुधिया काका की पनसारी की दुकान
- नीता का रोज़ बुधिया काका की दुकान से सामान खरीदना
- नीता का अपनी चार वर्ष की बेटी को घर पर अकेला छोड़ कर बैंक की नौकरी करना और परेशान रहना
- अगले दिन से नीता का बुधिया काका के यहाँ बेटी को छोड़ने का निर्णय लेकर निश्चिंत होना
- अगले दिन घर पर आकर बेटी का माँ नीता से लिपट-लिपट कर बहुत रोना

33.1 मूलपाठ

आइए एक बार तीनों लघुकथाएँ पढ़ लेते हैं –

1. कवि और लोहार

योरोप का एक प्रसिद्ध कवि किसी समय एक लोहार की दुकान के नज़दीक से गुज़र रहा था। कहीं से उसे गाने की आवाज सुनाई दी। कवि ने ध्यान से सुना तो पाया कि भीतर लोहार गा रहा था और वह गीत, जो लोहार गा रहा था, उसी कवि का लिखा हुआ था। लोहार कविता के शब्दों को तोड़-मरोड़ कर मनमाने ढंग से ऊँची आवाज में गाता जा रहा था। कवि के क्रोध का ठिकाना न रहा। वह तुरंत दुकान के भीतर चला गया। वहाँ लोहार के सारे औजार तरतीब से रखे हुए थे। कवि ने शीघ्रता से उन सबको तितर-बितर कर दिया। हँसली कहीं फेंकी तो हथौड़ा कहीं।

क्रुद्ध लोहार बोला, ''कौन है रे तू पागल ! मेरे औजारों को यों बिखेरकर मेरा काम क्यों बिगाड़ रहा है?''

कवि ने कहा, ''तुम्हारे सभी औजार अभी तो दुकान में ही हैं न? तुम्हारा क्या बिगड़ गया?''

शब्दार्थ

लोहार – लोहे का काम करने वाला

लज्जा से – शर्मसार होना, सिर झुकाना

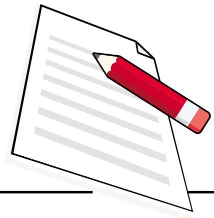

टिप्पणी

''वाह, वाह ! ये औजार ही तो मेरी संपत्ति हैं। यही मेरी जिंदगी हैं। इन पर इतना गुस्सा क्यों?'' उसने नम्र होकर जवाब दिया।

कवि ने कहा, ''तो मेरा गीत भी मेरी जिंदगी है। अभी-अभी तुम एक गीत गा रहे थे, वह मेरा ही लिखा हुआ है। मेरे गीत को तुम तोड़-मरोड़ कर क्यों गा रहे थे। उस पर तुम्हें इतना गुस्सा क्यों?''

लोहार ने लज्जा से सिर झुका दिया।

—सुब्रह्यमण्यम् भारती

2. क्या नहीं कर सकता?

''अभी-अभी जोर-शोर से गरजने के बाद क्यों चुप हो गए?''

''सोच रहा हूँ, बरसूँ या नहीं।''

''क्यों? मौसम तो है ही तुम्हारा, है कि नहीं ?''

''हाँ, है, लेकिन....... ।''

''उतर नहीं सके तो मैं ले चलूँ। तुम्हारी मदद करने आई हूँ।''

''नहीं, रुको, सोच रहा हूँ।''

''क्या?''

''न बरसूँ, यही।''

''तब तो सूखा पड़ जाएगा। सूखे के नाम पैसे बटोरने वाले बहुत हो गए हैं।''

''बरसूँगा, तो भी वही हाल। बाढ़ के नाम पर पैसे बनाने वाले लाभ की खुशी की कल्पना में मस्त हैं।''

''सही मात्रा में बरसों, ज्यादा नहीं ताकि बाढ़ न आ जाए।''

''वह कैसे? अगर थोड़ा-सा भी बरसूँ तो यूँ ही नकली बाढ़ तो आ ही जाएगी। आदमी क्या नहीं कर सकता?''

शायद फिर उत्तर देने की आवश्यकता न रही हो, हवा चुप हो गई।

—इबोहलसिंह कांग्जम

3. सड़क का आदमी

जेठ की तपती दुपहरी में भी बिना छतरी के राघव सरकार को चलने की आदत थी। वे दृढ़ संकल्प वाले व्यक्ति थे, सो आज भी पगडंडी पर निकल पड़े। पैरों में जूते जरूर थे, लेकिन उनकी कीलें उस तरह निकली हुई थीं कि दोनों पैरों में जख्म हो गए थे। उनके दोनों पैरों की तुलना मृत्युशैया पर पड़े भीष्म पितामह के पैरों से करना अनुचित नहीं होगा। उनके मुखमंडल पर परेशान आदमी जैसी कोई झलक नहीं थी और उनके कदम तेजी से निश्चिंत बढ़ रहे थे।

टिप्पणी

किसी का अनुग्रह या किसी की दया उन्होंने कभी चाही हो, ऐसा आज तक नहीं सुना गया। उनके मित्र बताते हैं, वे किसी पर कभी आश्रित नहीं हुए, खुद सबका भला करने की भरसक कोशिश करते हैं। अपने सिर को सदा ऊँचा उठाए रखना ही उनकी जिंदगी का एक मात्र सिद्धांत है।

वे पगडंडी पर चले जा रहे थे कि टन-टन की घंटी बजाता हुआ एक रिक्शावाला उनके पीछे हो लिया, ''रिक्शा चाहिए बाबू, रिक्शा!''

राघव सरकार ने देखा, एक कृशकाय उनकी ओर याचना-भरी नजर से देख रहा था, पर इस मामले में उनका सिद्धांत ही निराला था। वे यह मानते थे कि कोई अमानुष ही होगा, जो दूसरे से अपना बोझ खिंचवा सकता है, वह अपने जीवन में कभी भी पालकी या रिक्शा पर नहीं चढ़े थे। वह उसे पशुता मानते थे। माथे का पसीना पोंछते हुए उन्होंने कहा, ''नहीं, रिक्शा नहीं चाहिए।''

पगडंडी पर वह तेजी से चलने लगे। रिक्शेवाला भी उनके पीछे टन-टन घंटी बजाते हुए चलने लगा। अचानक उनके दिमाग में कौंधा – शायद इस गरीब के पास अन्न जुटाने का यही एकमात्र उपाय हो। वह पढ़े-लिखे थे, सो उनके मन में पूंजीवाद, दरिद्र नारायण, बोलेशेविककार, श्रम के विभाजन, बस्ती की दुर्दशा आदि अनेक बातें क्षण भर में आईं और गईं। राघव ने फिर एक बार जाते-जाते देखा। ओह, यह रिक्शेवाला सचमुच ही कितना निरीह है... उसकी दुर्बलता देखकर राघव का हृदय दया से भर आया।

घंटी टनाटनकर रिक्शेवाले ने फिर कहा, ''बाबू चलिए न! आपको पहुँचा दें, कहाँ जाएंगे ?''

''शिवतला तक जाने के कितने पैसे लोगे?''

''छह पैसे!''

''अच्छा चलो।''

लेकिन राघव सरकार रिक्शे पर सवार नहीं हुए। वह पहले की तरह ही पगडंडी पर चलते रहे।

''आइए बाबू, चढ़िए।'' रिक्शेवाला फिर गिड़गिड़ाया।

''तुम चलो न !''

राघव ने चलने की रफ़्तार तेज कर दी।

बीच-बीच में दोनों के बीच यह संवाद होते रहे।

''आइए बाबू चढ़िए न!''

''तुम चलो न !''

शिवतला पहुँचकर जेब से छह पैसे निकालकर राघव सरकार ने रिक्शेवाले को देते हुए कहा,

''यह लो ।''

शब्दार्थ

- **दृढ़ संकल्प** – पक्का इरादा
- **मृत्युशैया** – वह बिस्तर जहाँ मृत व्यक्ति लेटा हो
- **निश्चिंत** – बिना किसी चिंता के
- **अनुग्रह** – कृपा
- **आश्रित** – निर्भर होना
- **सिर को ऊँचा उठाए रखना** – सम्मान से रहना
- **कृशकाय** – पतला-दुबला व्यक्ति
- **अमानुष** – मानव के गुणों से रहित, अमानवीय
- **पशुता** – पशु के समान व्यवहार
- **दुर्दशा** – बुरी स्थिति
- **आँखों से ओझल हो जाना** – दिखाई न देना

टिप्पणी

''आप तो रिक्शे पर चढ़े ही नहीं।''

''मैं रिक्शे पर नहीं चढ़ता।''

''क्यों ?''

''रिक्शे पर चढ़ना पाप है।''

''ओह आपको पहले ही बता देना था।'' रिक्शेवाला के चेहरे पर घृणा का भाव उभर आया। उसने पसीना पोंछा और धीरे-धीरे चलने लगा।

''पैसे ले जाओ।''

''हम किसी से भीख नहीं लेते।''

टन-टन घंटी बजाता हुआ वह आँखों से ओझल हो गया।

—बनफूल

33.2 बोध प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उत्तर दीजिए –

1. कवि को गाने की आवाज़ कहाँ से सुनाई दी?
2. गाना सुनते ही कवि के क्रोध का ठिकाना क्यों न रहा?
3. लोहार को गुस्सा क्यों आया?
4. बादल बार-बार क्यों सोच रहा था, ''बरसूँ या नहीं।''
5. हवा किस प्रकार से बादल की मदद करने को तैयार थी?
6. तीसरी लघुकथा में राघव सरकार के मित्रों की उनके बारे में क्या राय है?
7. राघव सरकार रिक्शे पर क्यों नहीं बैठना चाहते थे?
8. राघव सरकार ने जीवन में किन-किन सिद्धांतों को अपनाया हुआ था?

33.3 आइए समझें

आपने तीन लघुकथाएँ पढ़ीं। लघुकथा नवीन साहित्य की सर्वाधिक लोकप्रिय विधा है। आप अकसर समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में इन्हें पढ़ते होंगे। आप इन लघुकथाओं को पढ़ कर समझ गए होंगे कि

- लघुकथा कहानी की तुलना में बहुत छोटी है,
- छोटी होने के कारण सरलता और जल्दी से पढ़ी जाती है,
- यह एक बहुत ही रोचक विधा है,
- इसे पढ़ने में समय बहुत कम लगता है, और

- यह पाठक के हृदय पर तीखा वार करती है।
- इसकी भाषा तीखी और चुटीली होती है,
- लघुकथा में कोई-न-कोई व्यंग्य निहित होता है,
- इसमें नैतिक मूल्य प्रधान होता है जिससे कोई-न-कोई सीख मिलती है।

आइए तीन लघुकथाओं – 'कवि और लोहार', 'क्या नहीं कर सकता', और 'सड़क का आदमी' के बारे में थोड़ी और चर्चा करते हैं। पहली लघुकथा एक बार पुनः पढ़िए। इस कहानी को पढ़ने के बाद आपको क्या महसूस हुआ? यही न कि सभी को अपना कार्य बहुत प्यारा होता है चाहे वह लोहार हो या कवि। सभी को अपने कार्य करने के माध्यम भी बहुत प्यारे होते हैं चाहे वे औजार हों या शब्द। कोई भी उनमें बेतरतीबी नहीं देख सकता। मान लीजिए आप एक कलाकार हैं तो क्या आप अपने रंगों को ऐसे बिखरे हुए सहन कर पाएँगे या आपका ब्रुश कोई उठा कर कहीं फैंक दे तो क्या आपको अच्छा लगेगा इसी प्रकार कवि को भी अपने लिखे गीत के शब्दों की तोड़-मरोड़ पसंद नहीं आई और उसने उस पर प्रतिक्रिया व्यक्त की। कोई भी व्यवसाय छोटा अथवा बड़ा नहीं होता। आपने एक कहावत तो सुनी होगा – 'जहाँ काम आवै सुई कहा करै तलवार'। प्रत्येक का अपना महत्त्व है, कोई किसी का स्थान नहीं ले सकता। व्यक्ति को अपना व्यवसाय तो पसंद होता ही है साथ ही दूसरे के कार्य को सम्मान देना भी उसका कर्तव्य बनता है। यही सभ्य मानव के गुण हैं।

इसी प्रकार सभी मातृभाषियों को अपनी भाषा से लगाव होता है, प्रेम होता है परंतु इसका यह बिल्कुल भी अर्थ नहीं है कि आप दूसरे की मातृभाषा का सम्मान न करें। आप दूसरों से सम्मानपूर्वक व्यवहार करेंगे तो आपका भी लोग सम्मान करेंगे।

आइए, दूसरी लघुकथा 'क्या नहीं कर सकता' पुनः पढ़ते हैं। इस लघुकथा का शीर्षक कथा की सारी बातों को एक दम खोल देता यदि इसमें 'आदमी' भी लगा होता। आजकल भ्रष्टाचार के युग में आदमी कुछ भी कर सकता है। यही सोच कर बादल बार-बार विचार कर रहा है कि बरसे या न बरसे। हवा उसकी मदद करने पहुँचती है परंतु बादल उसे भी निरुत्तर कर देता है। भ्रष्टाचार अपने चरम पर है। ज़रा सा बादल बरसेगा और आदमी उसे नकली बाढ़ का रूप तुरंत कागजों पर दिखा कर अपना लाभ कमा लेगा। कथाकार ने आज के बढ़ते भ्रष्टाचार पर तीखा व्यंग्य कर स्थिति को उभारा है।

आइए तीसरी लघुकथा 'सड़क का आदमी' की चर्चा करते हैं। आप पहली लघुकथा में पढ़ चुके हैं कि हमें दूसरे व्यक्ति के व्यवसाय की, उसके काम में आने वाले औजारों की, उसकी भाषा की आदि सभी की इज्ज़त करनी चाहिए, उसे भरपूर सम्मान देना चाहिए। यदि आपके कुछ सिद्धांत हैं तो अगला व्यक्ति भी अपना सम्मान और सिद्धांत रखता है। यदि आप दृढ़ संकल्प हैं तो अन्य व्यक्ति चाहे उसका कोई भी व्यवसाय हो अपने संस्कार, संकल्प और आत्मसम्मान रखता है। यह बात सोच कर, समझ कर दूसरों का सम्मान करना आवश्यक है। तीसरी लघुकथा में इसी बात को एक घटना के द्वारा खोला गया है। माना राघव सरकार बहुत पढ़े-लिखे,

सिद्धांतवादी, आदर्शवादी, दृढ़ संकल्प वाले व्यक्ति हैं पर वह यह कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं एक रिक्शेवाले के अपने आदर्श और सिद्धांत नहीं हो सकते। छोटा काम करने वाला, दिखने में कृशकाय, निरीह व्यक्ति बिल्कुल वैसा ही करे जैसा कि सरकार राघव चाहते हैं।

ऐसा संभव नहीं है प्रत्येक व्यक्ति की अपनी पहचान होती है जिसे वह बरकरार रखने में अपना सब कुछ न्यौछावर कर देता है। रिक्शा चलाने वाले का भी अपना सम्मान है जिसे उसने बना कर रखा है। क्या आप रिक्शेवाले के दुख का अनुमान लगा सकते हैं जब राघव सरकार ने रिक्शे पर चढ़ने से इसलिए मना कर दिया क्यों कि वे मानते है कि रिक्शे पर चढ़ना पाप है। यहाँ राघव सरकार ने दूसरे के व्यवसाय को, उसकी रोजी–रोटी कमाने के माध्यम को तिरस्कृत किया, उसका अपमान किया जिसका उत्तर रिक्शेवाले ने यह कह दिया कि हम किसी से भीख नहीं माँगते। गरीब व्यक्ति का भी आत्मसम्मान होता है और वह उसकी रक्षा करता है।

उपर्युक्त तीनों कहानियों का विश्लेषण करने पर आप स्वयं ही समझ सकते हैं कि प्रत्येक कथा में कोई-न-कोई शिक्षा निष्कर्ष रूप में सामने आती है, क्या आप बता सकते हैं कि वे क्या हैं? यहाँ एक-एक वाक्य में लिखिए –

1. ....

2. ....

3. ....

पाठगत प्रश्न 33.1

1. निम्नलिखित कथनों में से सही तथा गलत कथनों के सामने सही (√) तथा गलत (X) के निशान लगाइए –

   (क) लोहार ने कविता के शब्दों को तोड़-मरोड़ कर ऊँची-नीची आवाज में गाया।

   (ख) इसके बदले में कवि ने लोहार का सामान तरतीब से लगा दिया।

   (ग) लोहार अपने औजारों को इधर-उधर देखकर बहुत आनंदित हुआ।

   (घ) यदि बादल न बरसता तो सूखा पड़ जाता और सूखे के नाम पर पैसे बटोरने वाले बहुत आ खड़े होते।

   (ङ) यदि हवा की सलाह मानकर बादल बरस जाता तो सभी बहुत आनंदित होते।

   (च) टन-टन घंटी वाला रिक्शा सरकार राघव को शिवतला पहुँचा कर आया।

   (छ) शिवतला पहुँचाने के रिक्शेवाले ने अधिक पैसे बोले इसलिए राघव ने चढ़ने से मना कर दिया।

टिप्पणी

2. निम्नलिखित कथनों का उपयुक्त मिलान कीजिए –

स्तंभ क	स्तंभ ख
(क) लोहार मनमाने ढंग से	i) लोहार के औजार तितर-बितर कर दिए।
(ख) सरकार राघव सिद्धांतवादी होने के कारण	ii) यदि तुम न बरसे तो सूखा पड़ जाएगा।
(ग) कवि ने प्रतिक्रियावश	iii) दोनों पैरों के जख्मी होने पर भी रिक्शे पर न बैठे।
(घ) हवा का बादल से कहना था	iv) कवि का लिखा गीत गा रहा था।

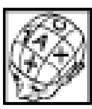

33.4 आपने क्या सीखा

1. लघुकथा नवीन साहित्य की सर्वाधिक लोकप्रिय विधा है। इनका प्रकाशन अकसर समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में होता रहता है।
2. लघुकथा कहानी की तुलना में बहुत छोटी है, छोटी होने के कारण सरलता और तीव्रता से पढ़ी जाती है।
3. यह एक बहुत ही रोचक विधा है, लघुकथा में कोई-न-कोई व्यंग्य निहित होता है।
4. इसमें नैतिक मूल्य प्रधान होता है जिससे कोई-न-कोई सीख मिलती है। इसकी भाषा तीखी और चुटीली होती है।
5. व्यक्ति को अपना व्यवसाय तो पसंद होता ही है साथ ही दूसरे के कार्य को सम्मान देना भी उसका कर्तव्य बनता है। यही सभ्य मानव के गुण हैं।
6. दूसरी लघुकथा में कथाकार ने आज के बढ़ते भ्रष्टाचार पर तीखा व्यंग्य पैदा कर वास्तविक स्थिति को उभारा है।
7. तीसरी लघुकथा 'सड़क का आदमी' बताती है कि हमें दूसरे व्यक्ति के व्यवसाय की, उसके काम में आने वाले औजारों की, उसकी भाषा आदि की सभी की इज्ज़त करनी चाहिए, उसे भरपूर सम्मान देना चाहिए।

33.5 योग्यता विस्तार

1. इस पाठ में आपने तीन लघुकथाएँ पढ़ीं। ये लघुकथाएँ डा. बलराम द्वारा संपादित विश्व लघुकथा कोश के दूसरे खंड से आपके पठन के लिए चयनित की गई हैं। यह विश्व कोश आठ खंडों में प्रकाशित है। इसमें विश्व की सभी सुप्रसिद्ध भाषाओं में लघुकथाएँ संगृहीत हैं। आपको जानकर अचरज होगा कि ये लघुकथाएँ हिंदी भाषा में ही नहीं बल्कि विश्व की अनेक भाषाओं के साथ-साथ

हमारी अन्य भारतीय भाषाओं से हिंदी में अनुवादित की गई है। पहली तमिल लघुकथा ''कवि और लोहार'', दूसरी लघुकथा ''क्या नहीं कर सकता'' मणिपुरी भाषा में इबोहलसिंह कांग्जम द्वारा रचित से हिंदी में अनूदित कथा है तथा तीसरी लघुकथा ''सड़क का आदमी'' बांग्ला भाषा में सुप्रसिद्ध लेखक बनफूल द्वारा रचित है।

2. हिंदी पत्र-पत्रिकाओं से विषय संबंधी अन्य लघुकथाएँ ढूँढ़ कर पढ़िए।
3. अन्य भारतीय भाषाओं की लघुकथाओं के अनुवाद अकसर प्रकाशित होते रहते हैं, उन्हें एकत्रित कर पढ़ने का प्रयास कीजिए।
4. पुस्तकालय में जाकर अन्य लघुकथा कोश की खोज कीजिए और उनमें से अपनी पसंद की लघुकथाएँ पढ़िए।

33.6 पाठांत प्रश्न

1. लघुकथा की प्रमुख तीन विशेषताएँ उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
2. लोहार ने क्यों कहा कि ''ये औजार ही तो मेरी संपत्ति हैं।''
3. ''तो यह गीत भी मेरी जिंदगी है।'' वाक्य कहने से कवि का क्या आशय है स्पष्ट कीजिए।
4. पहली कथा में अंत में लोहार ने लज्जा से सिर क्यों झुका लिया?,
5. दूसरी लघुकथा में हवा ने बादल को क्या सलाह दी?
6. बादल का जवाब सुनकर हवा की बोलती क्यों बंद हो गई?
7. ''क्या नहीं कर सकता'' लघुकथा के शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए।
8. ''सड़का का आदमी'' लघुकथा के राघव सरकार के पैरों की तुलना मृत्युशैया पर पड़े भीष्म पितामह के पैरों से क्यों की गई है?
9. दूसरी लघुकथा में बादल ने क्या सोच कर कहा, ''बरसूँ या नहीं।''
10. तीसरी लघुकथा में राघव सरकार को दृढ़ संकल्प वाला व्यक्ति क्यों कहा गया है?
11. राघव सरकार रिक्शे पर बैठना पाप क्यों मानते थे?
12. निम्नलिखित शब्दों का अर्थ स्पष्ट कीजिए ––

    पूंजीवाद, दरिद्र नारायण, श्रम के विभाजन
13. रिक्शेवाले के चेहरे पर घृणा का भाव क्यों उभर आया?
14. रिक्शेवाले ने क्यों कहा ''हम किसी से भीख नहीं लेते।''
15. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए––

    सिर ऊँचा उठाए रखना, आँखों से ओझल हो जाना, लज्जा से सिर झुकाना,

16. निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग या प्रत्यय जोड़कर दो-दो नए शब्द बनाइए:
    सिद्ध, नम्र, उचित, आवश्यक, उत्तर, ग्रह, हृदय
17. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए:
    जिंदगी, खुशी, मानुष, निराला

33.7 उत्तरमाला

बोधप्रश्नों के उत्तर

1. लोहार की दुकान से
2. कवि का रचित गीत मनमाने ढंग से लोहार गा रहा था।
3. कवि ने उसके औजार तितर-बितर कर दिए थे।
4. यदि बादल बरसेगा तो आदमी नकली बाढ़ कागज पर दिखा कर भ्रष्टाचार करेगा।
5. वह नीचे तक लेकर जाने के लिए तैयार थी।
6. वे कभी किसी पर आश्रित नहीं हुए।
7. वे रिक्शे पर बैठना अमानवीय और पाप समझते थे।
8. सिर उठाकर जीना, किसी पर आश्रित न होना, दृढ़ संकल्पी, पढ़े-लिखे, आत्मसम्मानी

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

33.1 1. (क) √ (ख) X (ग) X (घ) √ (ङ) √ (च) X (छ) X

2.

स्तंभ क	स्तंभ ख
(क)	iv)
(ख)	iii)
(ग)	i)
(घ)	ii)